RESEARCHERID
THOMSON REUTERS

[कुमार, 6(7): July 2019] ISSN 2348 – 8034
DOI- 10.5281/zenodo.3352091 Impact Factor- 5.070

GLOBAL JOURNAL OF ENGINEERING SCIENCE AND RESEARCHES

ग्राम फीना में स्वतंत्रता आंदोलनों की लहर

Wave of Independence movement in village Pheena, dist Bijnor, U.P.

इं० हेमन्त कुमार
ग्राम फीना, जनपद–बिजनौर, (उ.प्र.)
Assistant Engineer, Flood Management Information System Center, Dr. Ram Manohar Lohiya, Parikalp Bhawan, Irrigation & Water Resources Department U.P. Telibagh, Lucknow. Native Pheena, Bijnor UP.

ABSTRACT

ग्राम फीना, जनपद बिजनौर, उत्तर प्रदेश का एक दूरस्थ गाँव है। जिला मुख्यालय से इसकी दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। आजादी की लड़ाई में यहाँ के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था, जो कि एक रिकार्ड भी है। उस समय जब गाँवों में स्वतंत्रता आंदोलनों का प्रवाह और खबरें बहुत कम पहुँचती थी। तब भी फीना के लोग आंदोलन में सक्रिय थे। गाँधीजी को सहयोग करने के लिए फीना के क्रान्तिकारी क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी पूना तक गए थे। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में यहाँ के सैकड़ों लोग शामिल हुए थे। इस गाँव से 14 लोग स्वतंत्रता आंदोलन के सिलसिले में महीनों तक जेल में बंद रहे थे। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के बाद ये सेनानी गुमनाम हो गए। प्रस्तुत शोधपत्र ग्राम फीना के गुमनाम क्रांतिकारियों एवं उनके देशप्रेम की प्रबल भावना को बड़े पटल पर उजागर करने का एक छोटा सा प्रयास है।

Pheena is a remote village of district Bijnor in Uttar Pradesh. This village is situated 50 kilometer far from district headquarter. People participated in record number in independence movement of India from this village in that era when news and awareness program reaches very delay and with low intensity in such remote villages. From this village freedom fighter Mr. Kshetrapal Singh Disondi went Pune to participate in movement with Mahatma Gandhi. More than 250 people participated very actively in ***Asahyog Andolan*** in 1942. There are 14 listed freedom fighter prisoner from this village, which is a record. Unfortunately those freedom fighter forgotten after independence. Present research paper is a little step towards **To show off** their name, introduction and their strong passion of patriotism on vast platform.

Key words:–Pheena, Bijnor, Indipandance Movement in Pheena, freedom fighter, Participation of village pheena in indipendancs movement. Vasant singh, Randheer singh, Kshetrapal singh, Hori singh, Dr. Bharat singh, Pratap saini, Ghasiram, Bakes, Jaidev singh, Indipandance Movement in Pheena article by Er. Hemant kumar.

---

(1) प्रस्तावना

फीना, जिला बिजनौर का एक ऐतिहासिक और बड़ा गाँव है। यह गाँव बिजनौर शहर से दक्षिण–पूर्व में, नूरपुर–नौगावां–अमरोहा मार्ग पर स्थित है। जिला मुख्यालय बिजनौर से सड़क मार्ग द्वारा इसकी दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। अंग्रेजी काल में जब संचार के साधन बहुत कम थे, तब यह दूरी, बहुत अधिक मानी जाती थी, और ऐसे गाँवों को दूरस्थ गाँवों में गिना जाता था। इस हिसाब से फीना भी एक दूरस्थ गाँव था। देखने में आया है कि मुख्य शहरों से दूर बसे गाँवों में विकास, और समसामयिक खबरों के साथ–साथ आंदोलनों की लहर भी देर से पहुँचती है। परन्तु दूरस्थ गाँव होने के बावजूद भी फीना के लोगों की, स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम से ही होने लगी थी, जो कि उत्तरोतर बढ़ती गई। इस गाँव ने सबसे उल्लेखनीय तथा अग्रणी भूमिका सन 1942 के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' में निभाई। हालांकि स्वतंत्रता के लिए हुए शुरुआती आंदोलनों की गतिविधियाँ भी यहाँ चल रही थी। जिनमें भाग लेने वाले कुछ सेनानियों का पुस्तकीय प्रमाण भी मौजूद है। सरकारी अभिलेखों के अनुसार सन 1942 के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन में, ग्राम फीना से 14 लोग जेल गए थे, तथा अन्य स्रोतों के अनुसार कम से कम ढ़ाई सौ लोगों ने भाग लिया था। किसी एक गाँव के लोगों द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में इतनी बड़ी संख्या में भाग लेने का उदाहरण कहीं और सुनने को नहीं मिलता। इन आन्दोलनों की क्रमिक चर्चा आगे की जा रही है।

(2) फीना में कांग्रेस की स्थापना एवं प्रसार

कांग्रेस की कमेटी, ग्राम फीना में भी गठित की गई। फीना निवासी श्री बसंत सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब पुत्र न्यादर सिंह कदरू तथा श्री रणधीर सिंह पोटिया पुत्र मुन्ना सिंह, सन 1925–26 में कांग्रेस से जुड़ गए थे। ये लोग कांग्रेस में शामिल होने वाले ग्राम फीना के आरंभिक कार्यकर्ता थे। बाद में जयदेव सिंह दिसोन्दी,

क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी, डा० भारत सिंह, होरी सिंह, दिलीप सिंह तथा प्रताप सैनी कांग्रेस में शामिल हुए। रतनगढ़ में जन्मे महावीर त्यागी एवं इनके बड़े भाई धर्मवीर सिंह त्यागी, राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के साथ आंदोलन करने वाले, जिला बिजनौर के कुछ एक आंदोलनकारियों में से थे, और इन्होने जिला बिजनौर में कांग्रेस की स्थपना करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। चूंकि ग्राम रतनगढ, फीना से लगभग 3.50 किलोमीटर ही दूर है, इसलिए अनुमान है कि फीना में भी 1920–21 के आस–पास कांग्रेस कमेटी का गठन हो गया होगा। महावीर त्यागी का जन्म रतनगढ़ ग्राम में सन 1892 कों हुआ था।

फीना के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी
क्षेत्रपाल सिंह पुत्र मुन्ना सिंह (दिसो-धी)

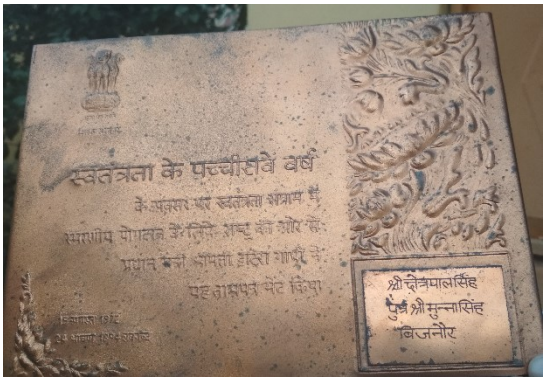

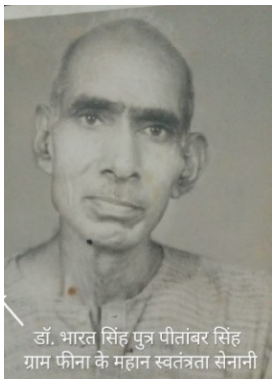
डॉ. भारत सिंह पुत्र पीतांबर सिंह
ग्राम फीना के महान स्वतंत्रता सेनानी

(3) सन 1919 का असहयोग आंदोलन

अभी तक की शोध में फीना में इस आन्दोलन के होने के कोई प्रमाण नही मिले।

(4) 'नमक सत्याग्रह' एवं 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में फीना की भागीदारी

नमक सत्याग्रह को ही विस्तार देते हुए 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' किया गया था। इसमें फीना के दो सत्याग्रहियो के प्रमाण पुस्तकों में मिलते हैं जो इस आन्दोलन में शामिल हुए थे। बसंत सिंह पुत्र न्यादर सिंह एवं क्षेत्रपाल सिंह पुत्र मुन्ना सिंह ने इन आन्दोलनों में भाग लिया था। फीना के निवासियों में मिल–जुलकर रहने तथा आंदोलनों में बड़ी संख्या में भाग लेने की परंपरा रही है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ अन्य लोगों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया होगा। परंतु उनमें से अधिकांश के नाम नही पता चल पाए हैं।

(5) 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में फीना के लोगों की भागीदारी

सितम्बर 1940 में महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया था। इसमें फीना से क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी ने 1941 में पूना जाकर गाँधी जी के साथ व्यक्तिगत सत्याग्रह किया था। बसंत सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब पुत्र न्यादर सिंह भी पूना जाना चाहते थे, परन्तु किसी कारण नही जा पाए और उन्होने गाँव में रहकर ही धरना दिया था, जिसमें उनके साथ गाँव के रणधीर सिंह पोटिया, मुरारी धी वर आदि कई लोग बैठे थे।

(6) 1942 के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन में फीना के लोगों की भागीदारी

भूमिका–नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा द्वितीय विश्व युद्ध के समय 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' जैसे अनेक आंदोलनों को गांधी जी चला चुके। इस कारण देश को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए पूरे देश के लोगों ने गांधी जी को अपना सबसे बड़ा नेता मान लिया था। लोगों के विश्वास से मिले बल के आधार पर गांधी जी देश के अन्य बड़े नेताओं तथा आम जनता के सहयोग से देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने का यथासंभव प्रयास कर रहे थे, फिर भी अंग्रेजों द्वारा देश छोड़ने की दूर–दूर तक कोई संभावना नजर नहीं आ रही थी। गांधी जी एवं अन्य स्वतंत्रता सेनानियों पर देश को स्वतन्त्र कराने का दबाव बढ़ता जा रहा था। इसी क्रम में 7–8 अगस्त 1942 से महात्मा गांधी ने अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू किया। 8 अगस्त सन 1942 की रात को उन्होने कांग्रेस प्रतिनिधियों के साथ एक सभा की और उसमें स्वतंत्रता के लिए अंतिम लड़ाई की रूपरेखा प्रस्तुत की। सभा में उन्होने एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाषण दिया था जिसका सार इस प्रकार था–

''आपने मुझे देश की स्वतंत्रता के लिये आगे किया है। हमने अंग्रजों से देश छोड़ने के लिए कई बार कहा परन्तु उनका झूठ और कपट बढ़ता ही जा रहा है और अकड़कर चल रहा है। अब मैं तुरंत स्वतंत्रता चाहता हूँ। हम और गुलामी नहीं सह सकते। पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी चीज से हम संतुष्ट नहीं होगें। इसलिए स्वतंत्रता की अंतिम लड़ाई के लिए मैं आपको एक मंत्र दे रहा हूं। 'करो या मरो'। अब हम भारत को हर जतन करके स्वतंत्र कराएंगे या इस प्रयास में मर मिटेगें।'' उनके भाषण की गम्भीरता देखकर अंग्रेज सरकार ने 9 अगस्त 1942 को ही गाँधी जी एवं अन्य प्रमुख देशभक्त नेताओं को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थान पर भेज दिया और कांग्रेस को गैरकानूनी संगठन घोषित कर दिया। महात्मा गाँधी तथा देश के बड़े नेताओं की गिरफ्तारी से देशवासियों में भारी आक्रोश पैदा हो गया। साथ ही महात्मा गाँधी द्वारा दिए गए 'करो या मरो' के मंत्र का देशवासियों पर अद्भुत असर हुआ। जनता के आक्रोश के कारण देशभर में जगह–जगह हड़ताल होने लगीं, कारखाने, स्कूल और कालेज बंद हो गए। अनेक जगह भीड़ हिंसक हो गई। लोगों ने अनेक स्थानों पर अंग्रेजी सत्ता के प्रतीकों जैसे– टेलीफोन, रेल लाइन, सरकारी इमारतों में तोड़फोड कर भारी नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया। अंग्रेजी ध्वज को गुलामी का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाने लगा, इसलिए जहाँ–जहाँ अंग्रेजी झंडा मिलता, लोग उसे उतारकर भारतीय तिरंगा फहराने लगे।

इसी क्रम में 11–12 अगस्त 1942 की रात में जिला बिजनौर के नूरपुर क्षेत्र के अग्रणी देशभक्त कार्यकर्ताओं ने एक गुप्त मीटिंग की। उसमें यह निर्णय लिया गया कि आज से 5 दिनों बाद अर्थात 16 अगस्त को हम लोग नूरपुर थाने में भारतीय तिरंगा फहराएगें। यह भी निर्णय लिया गया कि क्षेत्र की आम जनता भी इस दिन अधिक से अधिक संख्या में थाने पर पहुँचे, ताकि अंग्रेजी सरकार को जन–आक्रोश का संकेत जाए। कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए गाँव–गाँव जाकर गोपनीय रूप से 16 अगस्त को नूरपुर पंहुचने के लिए बताया जाने लगा।

I. 16 अगस्त को नूरपुर जाने के लिए फीनावासियों की तैयारी

फीना गाँव के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों ने निर्णय लिया कि गाँव के अन्य कार्यकर्ताओं तथा आम जनता को नूरपुर चलने के लिए काफी पहले न बताकर 16 अगस्त की सुबह–सुबह अचानक बताया जाए। इससे पुलिस को हमारी योजना का पता नहीं चल पाएगा। इस हिसाब से 16 अगस्त 1942 को सुबह लगभग 7–8 बजे होलियान मुहल्ले में स्थित गिदड़यों के घेर में एक मीटिंग बुलाई गई। इस मीटिंग में फीना के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों जैसे क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी, डा० भारत सिंह, बसंत सिंह उर्फ वालिंटियर साहब, रणधीर सिंह पोटिया, होरी सिंह डुंड तथा कुछ अन्य लोगों ने अपनी बात रखी। इन लोगों ने महात्मा गाँधी द्वारा दिए गये 'करो या मरो' के संदेश को अपनी भाषा में लोगों के सामने रखा, जिसका सार इस प्रकार था–

''लंबे समय से अंग्रेजों ने हमारे देश को गुलाम बनाया हुआ है, यह हमारे लिए बहुत अपमान की बात है। देश के बड़े नेतागण अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए बार–बार समझा चुके है, परंतु अंग्रेज सरकार पर कोई असर नहीं पड़ता। अंग्रेज सरकार सोचती है कि देश की आम जनता तो चुप है, केवल कुछ नेता ही हमारे विरोध में हैं, और हजार–दो हजार नेता हमारा क्या बिगाड़ लेगे। उनकी इस सोच का उत्तर देने के लिए महात्मा गाँधी ने, अंग्रेजों के साथ आर–पार की लड़ाई का संदेश दिया है। उनका कहना है कि अब हम और अधिक गुलामी बर्दाश्त नहीं कर सकते। अंग्रेजो के खिलाफ जो कुछ भी किया जा सकता है करो, अथवा इस प्रयास में मर मिटो। अब हमें उनके संदेश को लागू करना है, इसलिए भाइयों आज से आप और हम अंग्रेजों की शासन प्रणाली में किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं करेंगे। जहाँ–जहाँ अंग्रेजों ने अपने झंडे लगाए हुए हैं, उनको हटाकर अपने देश का तिरंगा झंडा फहरा दो। जो लोग अंग्रेजों की नौकरी कर रहे हैं, वे इस्तीफा दे दें और स्वतंत्रता के आंदोलन में शामिल हो जाएं। ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दो कि सड़क, रेल, टेलीफोन, टेलीग्राम, डाकघर आदि सरकारी तंत्र नष्ट हो जाए और कुछ भी काम न कर पाए। अंग्रेजों को पता लग जाना चाहिए कि भारतवासियों के सहयोग के बिना वे भारत में नहीं टिक सकते। हमारे अनेक प्यारे देशवासी यह मानते हैं कि, अंग्रेजी शासन हमारे लिए बहुत कुछ कर रहा है। परंतु सच्चाई यह है कि अंग्रेज भारत में जो भी काम करते हैं वह अपने फायदे के लिए ही करते हैं। अंग्रेज लाख कष्ट सहने के बावजूद भारत में टिके हुए हैं, क्योंकि उनका बहुत बड़ा फायदा है। उन्हें भारत और यहाँ के लोगों की भलाई से कुछ लेना–देना नहीं है। अंग्रेजों ने टेलीफोन इसलिए लगवाए हैं, ताकि वे, आपस में बिना समय गवाएं बात कर सकें, स्वतंत्रता सेनानियों के आंदोलन और गतिविधियों का तत्काल पता लगा सके, न कि भारत के लोगों की सुविधा के लिए। अंग्रेजों ने नहरें इसलिए बनवाई हैं ताकि अधिक से अधिक उपज हो और इससे उनका राजस्व बढ़ जाए, न कि इसलिए, कि भारत के किसानों का लाभ हो। अंग्रेजों ने रेल गाड़ियां इसलिए चलवायी हैं ताकि उनके फायदे का सामान यहाँ–वहाँ आसानी से एवं जल्द से जल्द ढोया जा सके, न कि भारत की आम जनता के लिए। अंग्रेज सड़के इसलिए बनवाते हैं ताकि उनकी सेना आसानी से कहीं भी पहुंच सके, न कि इसलिए, कि भारत के लोग उसका फायदा उठाएं। सच्चाई तो यह है कि भारत की संपदा लूट–लूट कर आसानी से इंग्लैंड को भेजने के मूल मकसद से ही अंग्रेज रेलगाड़ी और सड़क बनवाते हैं।

भाईयों, हमें अंग्रेजों के ऐसे छल–कपट समझने की आवश्यकता है। अंग्रेज हमारे हितैषी नहीं हैं वे अपना हित साधने के लिए, हमारा हितैषी होने का ढोंग रचते हैं। उनके ढोंग ज्यादा समय नहीं चलने वाले। महात्मा गाँधी और देश के अन्य बड़े नेताओं ने अंग्रेजो के कपट और ढोंग को उजागर करने का प्रयास किया है, जिससे सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानों पर कैद कर लिया है। हमारे पूज्य नेताओं को बिना दोष गिरफ्तार

करके अंग्रेजों ने हमे और हमारे देश को बहुत बड़ी चुनौती दी है। अभी तक हमने कई बार अंग्रेजो के खिलाफ आंदोलन किए हैं, पर एकमत और एकजुट न हो पाने के कारण सफलता नहीं मिल पाई। किंतु आज परिस्थितियां बदली हुई हैं, पूरे देश में अंग्रेजो के खिलाफ भारी आक्रोश है। हर जगह, हर सूबे की जनता अंग्रेजों से सीधी टक्कर लेने के लिए उठ खड़ी हुई है। अभी तक हमारे एकजुट होने भर की देर थी। आप यह सच्चाई जान लीजिए, कि जिस दिन हम एकजुट हो गए, उस दिन दुनिया की कोई ताकत नहीं है जिसके बल पर अंग्रेज भारत में टिक सके। इस समय पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा है, जिससे शत्रु बहुत कमजोर हो गया है। अतः अंग्रेजों को देश से भगाने का यह बहुत अनुकूल अवसर है। अब हमें मातृभूमि की रक्षा की निर्णायक लड़ाई लड़नी है, चाहे जो नुकसान हो जाए। हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ीयाँ, आजाद भारत में जन्म लें और उन्हे यह कहने को न रह जाए, कि हमारे पूर्वज भारत को आजाद कराने के काबिल ही नहीं थे। भाईयों, याद रखिए, हमारा गाँव क्षत्रिय लोगों का गाँव है, जिसका मूल धर्म देश और प्रजा की रक्षा करना होता है। इतिहास गवाह है, कि हम लोग मातृभूमि की रक्षा के लिए, मरने से भी पीछे नहीं हटते। अब हम अंग्रेजों को देश से बाहर करके ही दम लेंगे भले ही हमें जान की बाजी क्यों न लगानी पड़ जाए।

ऐसे ओजस्वी वक्तव्यों को सुनकर वातावरण देशभक्तिमय हो गया और किसी ने **भारत माता की जय। अंग्रेजी हुकूमत मुर्दाबाद। हिंदुस्तान जिंदाबाद। महात्मा गांधी जिंदाबाद। भारत माता की जय।** के नारे लगाने शुरू कर दिए। मौजूद लोगों ने भी पूरे मनोयोग से नारे लगाए। वह परिसर गगनभेदी नारों से गूँज उठा। मुहल्लेवासी तथा घेर में बँधे पशु नारों की गूँज से चौकन्ने हो गए और सभा की ओर देखने लगे।

सभा में मौजूद अनेक लोग आगे की रणनीति जानने के लिए बेचैन हो उठे और आश्वासन देने लगे कि देश के लिए जो भी हो सकेगा हम करेगें। आप बताएं, हमें क्या करना है। सभा की अगुवाई कर रहे क्षेत्रपाल सिंह, डा० भारत सिंह, बसंत सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब, रणधीर सिंह पोटिया तथा होरी सिंह डुंड ने मिल–जुल कर बताया कि हमारे क्षेत्र के बड़े देशभक्त कार्यकर्ताओं ने 11 अगस्त 1942 की रात को एक गुप्त मीटिंग की थी, और उसमें तय किया था कि 16 अगस्त 1942 को यानी कि आज, नूरपुर थाने पर शांतिपूर्वक भारतीय झंडा फहराना है। हमें अंग्रेजों को संदेश देना है कि नेतागण ही नहीं बल्कि देश के आम नागरिक भी अंग्रेजों के खिलाफ है, इसलिए आज हमें अधिक से अधिक संख्या में नूरपुर चलना है। इसके बाद जब तक आजादी नहीं मिल जाती, तब तक, सभा की शुरूआत में कही जा चुकी बातों के अनुसार सरकारी तंत्र का असहयोग तथा विरोध करना है।

इस सभा में आए लोगों की संख्या का ठीक–ठीक तो नहीं पता चल पाया, परंतु वहाँ मौजूद रहे श्री प्रताप सैनी एवं श्री रामपाल सिंह 'सब्दलपुरिया' से हुई मेरी (इस शोधपत्र के लेखक इं० हेमन्त कुमार) वार्ता के आधार पर कहा जा सकता है, कि इस सभा में 300 से 350 लोग आए थे। थाने में तिरंगा फहराने की बात सुनकर 10–15 लोग इस बात का स्पष्ट विरोध करते हुए, सभा को मिल–जुल कर समझाने लगे, कि ऐसा करना उचित नहीं होगा। समझाने वाले अधिकांश बुजुर्ग थे, जो जीवन को व्यावहारिक दृष्टिकोण से जीने के पक्षधर थे। परंतु इनकी बात अनसुनी कर दी गई, इससे ये लोग चेतावनी के लहजे में साफ–साफ कहने लगे कि, तिरंगे को फहराना ही है तो कहीं और फहरा लो। सरकारी इमारत पर तिंरगा फहराने का मतलब, सरकार से खुल्लम–खुल्ला झगड़ा करना है। अंग्रेज तिरंगे को किसी सूरत में नहीं फहरने देंगे, भले ही इसके लिए उन्हे लाठीचार्ज करना पड़े या गोली चलवानी पड़े। अंग्रेजों के पास बंदूक और गोलों की भरमार है, और हमारे पास ऐसे साधन नहीं हैं, ऐसे में हम किस प्रकार उनका मुकाबला कर सकते हैं? उपस्थित सेनानियों ने इस बात का जवाब देते हुए कहा कि, हम लोग थाने में लड़ाई–झगड़ा करने थोड़े ही जा रहे हैं। पहले थाने के सरकारी कर्मचारियों से ठंडे दिमाग से यह बात कही जाएगी कि, हमारे क्षेत्र की जनता, थाने पर भारतीय तिरंगा लहराते हुए देखना चाहती है, और सरकार को लोगों की भावनाओं का आदर करना चाहिए। फिर हम शांतिपूर्वक तिरंगा फहरा देगें। अंग्रेज सरकार के पास चाहे जितना गोली–बारूद क्यों न हो, परंतु जब हजारों लोग एक साथ वहाँ पहुँचेगें तो उनकी भी एक अलग ताकत होगी, जिसका सामना करना आसान नहीं होता। महात्मा गाँधी ने जनता की इसी ताकत के बल पर नमक कानून को खुले आम तोड़ दिया था। हर प्रकार का हथियार होने के बावजूद भी अंग्रेज सरकार कुछ नहीं कर पाई थी। हमें उनके सिद्धांतों पर विश्वास रखना चाहिए। रही बात आमने–सामने की लड़ाई की तो महात्मा गाँधी कह ही चुके हैं, कि गुलामी का जीवन जीने से कहीं अच्छा है, आजादी लेने के लिए देश के नाम पर मर–मिट जाना है। इसलिए हर प्रकार का संशय एवं डर निकालकर बड़ी संख्या में हम लोगों को नूरपुर चलना चाहिए। दूर–दूर तक के लोगों तक यह बात पहुँच चुकी है कि आज नूरपुर के आस–पास के गाँवों के लोग नूरपुर थाने पर तिरंगा फहराएंगे। यदि हम अपनी बात से पीछे हटते हैं और बड़ी संख्या में नूरपुर नहीं पहुँचते तो देश भर में हमारे क्षेत्र के नाम पर थू–थू होगी। तभी किसी सेनानी ने बोल दिया कि–***सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।।*** इस बात पर किसी को कोई जबाब नहीं सूझा।

अपनी बात न मानी जाती देख नूरपुर जाने का विरोध कर रहे 10–15 लोग यह कहते हुए वहाँ से चले गए कि तुम लोग अभी अंग्रेजों की ताकत का अन्दाजा ठीक से नहीं लगा पाए हो। अंग्रेजी राज इतना बड़ा है कि उसके किसी ना किसी हिस्से में सूरज निकला ही रहता है। थाने तक पहुँचना तो दूर, पुलिस तुम्हे नूरपुर में भी नहीं घुसने देगी। लकड़ी पर कत्तर बाँधे फिर रहे हो, इस झंडे को दिखाकर तुम आजादी ले लोगे? अंग्रेजों

की पीठ पीछे नारे लगाकर शोर मचाने से तुम्हें आजादी मिल जाएगी ? जिसको पुलिस के हाथों मरने का शौक है, वह मरे। कुछ अन्य लोग भी सभा छोड़कर जाने लगे। दो–चार लोग बहुत फुर्ती से उठे, और चले गए, जैसे कि पुलिस सभा में पहुँच गई हो और यहीं गोलाबारी शुरू करने वाली हो। कुछ लोगों के जाने से, थोड़ी देर के लिए वहाँ अफरा–तफरी का माहौल हो गया। गाँव का मामला था, सब एक दूसरे का उम्र के हिसाब से लिहाज और सम्मान करते थे, इसलिए दो–चार मिनट तक सभा को संचालित करने वाले लोग चुप ही रहे। आखिरकार किसी को जबरदस्ती तो आंदोलन में नहीं शामिल किया जा सकता था।

उल्लेखनीय बात यह है कि इस घटना के बाद भी अधिकांश लोग वहीं बैठे रहे और आगे होने वाली चर्चाओं की तरफ ध्यान देने लगे। उचित अवसर देखकर क्षेत्रपाल सिंह ने लोगों को समझाते हुए कहा कि, अब कदम वापस खींच लेना, देश और क्षेत्र के नाम पर कलंक होगा। इसलिए हमें कोई नकारात्मक बात नहीं सोचनी चाहिए। बसन्त सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब, डा० भारत सिंह तथा होरी सिंह ने लोगों को नूरपुर चलने के लिए पुनः प्रेरित करना शुरू कर दिया। इसी बीच 30–40 अन्य लोग नज़र बचाकर, दायें–बायें होकर या पेशाब आदि के बहाने सभा से खिसक लिए। शेष लोग वहीं जमे रहे और आगे की बात सुनते रहे, हालांकि सभा में, अन्त तक बैठे रहने वालों में से भी अनेक लोग नूरपुर नहीं गए थे। परन्तु कुछ लोग ऐसे थे जो इस सभा में तो उपस्थित नहीं थे, लेकिन पता लगने पर नूरपुर की तरफ गए थे। ज्यादातर लोग हाव–भाव से सेनानियों के साथ लग रहे थे, इसलिए अनुमान लगाया गया कि फीना से कम से कम ढ़ाई सौ लोग नूरपुर पहुँचेगे। ये बातें होते–होते नौ–साढ़े नौ बज गए थे और 12.00 बजे नूरपुर भी पहुँचना था। फीना गाँव नूरपुर से लगभग 10 किलोमीटर दूर है, और यदि लगातार एवं फुर्ती से चला जाए तो वहाँ तक पैदल पहुँचने में लगभग डेढ़–दो घंटे लगते हैं। इसलिए सभा को समाप्त की ओर ले जाते हुए क्षेत्रपाल सिंह ने आगे की योजना बतायी, और कहा कि सरकार को भनक न लगे इसलिए हमें 10–10, 15–15 लोगों की टोली में ही नूरपुर पहुँचना है। तिरंगा फहराने का कार्यक्रम दोपहर को 12.00 से 1.00 बजे के बीच किया जाना तय हुआ है। इसलिए सभी लोगों को 10.00 बजे तक, फीना से नूरपुर के लिए चल देना होगा। लगभग सभी प्रकार की बातें हो चुकी थी और 10.00 बजने में थोड़ा ही समय शेष बचा था, इसलिए यह सभा यहीं समाप्त कर दी गई। अब जिन लोगों का मन, जाने के लिए तैयार हुआ, वे जल्दी–जल्दी नूरपुर जाने की तैयारी करने लगे। लोगों में गजब की स्वस्फूर्त प्रेरणा थी। आधे–पौन घंटे में ही कई दल तैयार हो गए और एक–एक करके, पैदल–पैदल अमरोहा मार्ग पर नूरपुर की ओर जाने लगे। कुछ अग्रणी सेनानी अपने घर जाए बगैर, सभा से ही नूरपुर के लिए चल दिए, जबकि कुछ अग्रणी सेनानी गाँव के अन्य लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए सभा स्थल पर ही रुक गए। जो लोग नूरपुर जाने की तैयारी के लिए घर गये उनमें से कुछ के माता–पिता तथा परिचितो ने नूरपुर न जाने की सलाह दी। कुछ को अपने माता–पिता की कड़ी डाँट–फटकार का सामना भी करना पड़ा। जो लोग नूरपुर जा रहे थे उन पर कुछ लोगों ने दबी जुबान से ताने भी कसे जैसे कि– भाई, अब तो ये लोग आज़ादी लेकर ही लौटेगें! थाने में लगा अंग्रेजी झंडा उतारकर साथ लाना, तभी मानेगें तुम्हारी बहादुरी! ये हैं देश की सच्ची फिक्र करने वाले, बाकि तो सब दुश्मन हैं!

II. नूरपुर की तरफ कूच

फीना से नूरपुर की तरफ चलने पर क्रमशः रतनगढ़, लिंडरपुर, 'जाफराबाद कुरई' और तंगरोला गाँव मिलते हैं। वर्तमान में यह सड़क स्टेट हाई–वे 77 कहलाती है। सेनानियों की पहली टोली गाँव से निकलकर इसी सड़क पर आ गयी इसमें क्षेत्रपाल सिंह, प्रताप सैनी, डा० भारत सिंह, रणधीर सिंह, होरी सिंह, वालिन्टियर साहब, सुखलाल सिंह सांगी, घासीराम, मुरारी आदि लोग थे। संभवतया ग्राम मझौला से आए चंद्रपाल सिंह भी इसी टोली में थे, क्योंकि दो पुस्तकों में जिक्र हुआ है कि, नूरपुर में फीना की तरफ से आ रही टोली की अगुवाई क्षेत्रपाल सिंह तथा चंद्रपाल सिंह कर रहे थे। हालांकि इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला कि चंद्रपाल सिंह फीना की टोली के साथ ही नूरपुर गए थे, अथवा किसी और जगह से, फीना के दल के साथ हो गए थे। अमरोहा–नूरपुर मार्ग के किनारे बहुत पेड़ खड़े थे। गाँव से बाहर आने पर क्षेत्रपाल सिंह, प्रताप सैनी, घासीराम तथा सुखलाल सिंह सांगी ने इन पेड़ों की डंडेनुमा डालियाँ तोड़ ली। लाठीचार्ज से बचाव में डंडे काम आते हैं। सेनानियों को नूरपुर में पुलिस द्वारा लाठीचार्ज की भी आशंका थी। देशभक्ति की भावना तथा पुलिस को चकमा देने के लिए इन डंडों पर अनेक लोगों ने भारतीय तिरंगा बाँध लिया था। स्वतंत्रता सेनानी प्रताप सैनी के अनुसार उन्होंने शीशम के पेड़ से डाल तोड़ कर डंडा बनाया था और इस पर तिरंगा बांध लिया था, वे तिरंगा घर से साथ ले गए थे। लाठियाँ इसलिए नहीं ली गई ताकि पुलिस सुनियोजित हिंसा फैलाने का आरोप न लगा सके। टोली तेज कदमों से नूरपुर की तरफ बढ़ रही थी, अब लोगों के पास चलने के अलावा कोई और काम नहीं बचा था। कुछ लोग भूख मिटाने के लिए पटोली खोलकर गुड़ तथा चना खाने–खिलाने लगे। अनेक लोग बिना कुछ खाए ही नूरपुर की तरफ चल दिए थे। कई लोगों को सुबह नाश्ता करने या खाना खाने का समय ही नहीं मिल पाया, क्योंकि गाँव में सभा अचानक बुलाई गई थी और नूरपुर कूच करने थोड़ा पहले ही खत्म हुई थी। (यह सभा अचानक इसलिए बुलाई गयी थी, ताकि पुलिस–प्रशासन को सभा की भनक न लगे।)

चलते–चलते आंदोलन से जुड़ी बातों पर चर्चा तथा विचार–विमर्श होने लगा। इस दल में हर उम्र के लोग थे। जहाँ एक ओर बसंत सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब तथा क्षेत्रपाल सिंह प्रौढ़ अवस्था में थे, वहीं प्रताप सैनी जैसे सेनानियों की उम्र 20 वर्ष से भी कम थी। कम उम्र के लोगों ने अनेक प्रकार के सवाल किए। जैसे कि– अंग्रेज सरकार पिछले 20–30 सालों से हमारे नेताओं को बातों में फंसा कर राज कर रही है, अगर इस बार

भी अंग्रेजो ने हमारे बड़े नेताओं को समझा–बुझा लिया तो क्या होगा? जिस तरीके से हमारे गाँव से सैकड़ों लोग आज नूरपुर पहुँच रहे हैं। क्या उसी सोच के साथ दूसरे गाँवों के लोग भी आएंगे? अगर पुलिस ने झंडा न फहराने दिया तो क्या किया जाएगा? पूरे जिले में केवल हम लोग ही आज थाने में तिरंगा फहराएगें, इस बात से पूरे जिले में हमारा क्षेत्र और नाम अग्रणी हो जाएगा। दांडी यात्रा में महात्मा गाँधी कुल कितने कोस पैदल चलें होंगें? गाँधी जी को अंग्रेज सरकार ने किस जगह नजरबंद करके रखा हुआ है? क्या हमारे द्वारा तिरंगा फहराने की योजना, देश के बड़े नेताओं को बताई गई है? जो लोग सभा से उठ कर चले गए थे क्या उन्हे देश की चिन्ता नहीं होती? नूरपुर चलने के बारे में तुम्हारे घर के लोगो ने क्या कहा? कौन–कौन भरपेट खाकर आया है? इन प्रश्नों के जवाब भी साथ–साथ मिल रहे थे। यथा– पूरी दुनिया में जहाँ–जहाँ अंग्रेजों का राज है, वहाँ–वहाँ के लोग उनके खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। दुनिया के बड़े बुद्धिजीवी, किसी के द्वारा दूसरे देशो में राज करने को बुरा बता चुके हैं। हमारे देशवासियों द्वारा किए गए लंबे आंदोलन के कारण अंग्रेज अंदर से टूट चुके हैं, इसलिए देर–सवेर अंग्रेजों को देश छोड़ना ही पड़ेगा। फिर एक सच्चाई यह भी है कि, यदि देशवासी चुप बैठ गए तो अंग्रेज अपनी मर्जी से तो देश छोड़ने वाले हैं नही, इसलिए हमारे पास देश को आजाद कराने के लिए आंदोलन के सिवाय और कोई रास्ता भी तो नहीं है। किसी को तो बिल्ली के गले में घंटी बांधने का खतरा मोल लेना पड़ेगा और सब बातें जानने के बाद अगर यह खतरा हम लोग नहीं उठाएगें तो और कौन उठाएगा। फैसले अपने विवेक और क्षमता के अनुसार लेने चाहिए, न कि अन्य लोगों की मनोदशाओं एवं कथन को देखकर। इसलिए थाने पर तिरंगा फहराने का हमने जो फैसला लिया है, उससे हम पूर्णरूप से संतुष्ट हैं।

जितने भी लोग नूरपुर जा रहे थे वे सब अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों से अच्छी तरह परिचित थे, इसलिए हर परिस्थिति के लिए तैयार थे। जेल जाना पड़ सकता है, लाठी या गोली खानी पड़ सकती है। इस पर भी चर्चा हुई कि यदि संख्या के बल पर जबरदस्ती तिरंगा फहराया गया तो, पुलिस कोई ना कोई कार्यवाही जरूर करेगी। पुलिस को यह पता लगाना मुश्किल नही है कि किस गाँव से कौन–कौन व्यक्ति नूरपुर पहुँचा है। क्योंकि अंग्रेज पुलिस मुखबरी के लिए हर गाँव में कुछ लोगों को अपने साथ मिलाए रखती है। जब 'करो या मरो' की घोषणा करने मात्र से महात्मा गाँधी को अज्ञात स्थान पर ले जाकर नजरबंद कर दिया गया, तो देश के आम सेनानियों को भी जरूर जेल भेजा जाएगा। किसी ने प्रश्न किया यदि सभी अग्रणी क्रांतिकारीयों एवं आंदोलनकारियों को जेल में डाल दिया गया तो आंदोलन का संचालन कौन करेगा? इन सभी बातों के उत्तर में अनुभवी लोगों ने बताया कि यदि पुलिस हमें गिरफ्तार करने की कोशिश करती है तो उसकी पकड़ से बचने का प्रयास करना होगा। सरकार तो यह चाहती ही है, कि आंदोलन को चलाने वाले लोगों को जेल में डाल दिया जाए ताकि आंदोलन खुद ही ठप्प हो जाए। इसलिए गिरफ्तारी की नौबत आने पर भूमिगत रहकर आंदोलन को चलाना आज की परिस्थितियों में सबसे उपयुक्त रहेगा। किसी ने पूछा कि, यदि हम छुप गए तो पुलिस हमारे घर के लोगों की नाक में दम कर देगी। तो किसी ने उत्तर दिया कि, इस प्रकार की छोटी–बड़ी कुर्बानियाँ तो हमें और हमारे परिवार वालों को देनी ही पड़ेगीं, तब ही हमारा देश अंग्रेजों से मुक्त हो पाएगा। यदि हमारे परिवार वाले, हमारे कारण, अंग्रेजों का जुल्म सहते हैं, तो एक प्रकार से वे भी देश की सेवा कर रहे हैं। दल सकारात्मक विचारों से भरा था। इस प्रकार की बातें करते–करते कब रतनगढ़ आ गया पता ही नहीं चला, जो कि फीना से लगभग 3.5 किलोमीटर दूर है। रतनगढ़ को मराठा सर्मथक भारतीय योद्धाओं ने बसाया था। यह पहले से ही बुद्धिजीवियों का गाँव माना जाता है, इसलिए उस जमाने में भी यहाँ एक छोटा सा डाकघर था। जब सेनानी रतनगढ़ पहुँचे तो उस समय वहाँ पोस्टमास्टर मौजूद था। डाकघर के अन्दर एक पुराना सा सन्दूक रखा था, तथा बाहर लेटरबाक्स लगा था। लेटरबाक्स को फीना के निडर सेनानी सुखलाल सिंह सांगी ने डंडा मार–मारकर क्षतिग्रस्त कर दिया। फिर सेनानी डाकघर के अन्दर घुस गये, और वहाँ रखे संदूक पर डंडे बजाकर उसे पिचका दिया। पोस्टमास्टर चुपचाप एक कोने में खड़ा हो गया। किसी सेनानी ने उससे सरकारी नौकरी छोड़कर, आन्दोलन में शामिल होने को कहा, जिसे सुनकर उसका हलक सूख गया। यहाँ भारत माता की जय, अंग्रेजी हुकूमत मुर्दाबाद, हिंदुस्तान जिंदाबाद, महात्मा गांधी जिंदाबाद, के नारे लगाये गए। इसी बीच फीना के कुछ लोगों का एक और दल रतनगढ़ पहुँचा गया और उसने जल्द से जल्द नूरपुर पहुँचने के लिए कहा। इस पर सभी लोग डाकघर से निकलकर, तेजी से नूरपुर की तरफ चलने लगे।

बातों का दौर फिर शुरू हो गया। पीछे कौन–कौन लोग आ रहे हैं? घर में माहौल ठीक है न? देर से निकले हो लग रहा पेट–पूजा करके आए हो, खाने–पीने का कुछ सामान साथ लाए हो या बस हाथ हिलाते हुए चले आए? लगभग आधा घंटा चलने के बाद ग्राम लिंडरपुर आ गया। वहाँ लिंडरपुर के श्री बलदेव सिंह पुत्र चुन्ना सिंह तथा रामौ–रूपपुर से आए इन्दर सिंह वत्स अपने साथियों सहित पहले से ही सबका इंतजार कर रहे थे। ये सब लोग फीना के सेनानियों के साथ मिल गए। सबने मिलकर हिंदुस्तान जिंदाबाद, अंग्रेजी हुकूमत मुर्दाबाद, भारत माता की जय, महात्मा गाँधी जिंदाबाद के नारे लगाये गए। लिंडरपुर से लगभग आधा किलोमीटर आगे 'जाफराबाद कुरई' गाँव है, यहाँ के स्वतंत्रता सेनानी नौबहार सिंह पुत्र चतुर्भुज सिंह, कल्लन खाँ पुत्र कादर, उमराव सिंह पुत्र फतेह सिंह (गंजो के परिवार में), भीम सिंह पुत्र फतेह सिंह एवं न्यादर सिंह पुत्र रघुवीर सिंह अपने साथियों के साथ फीना की तरफ से आने वाले सेनानियों का इंतजार कर रहे थे। उमराव सिंह तथा भीम सिंह सगे भाई थे। ये सब इसी समूह में मिल गये। एक बार फिर महात्मा गाँधी जिंदाबाद, अंग्रेजी हुकूमत मुर्दाबाद, भारत माता की जय, हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारे लगे। इसी बीच फीना के कुछ और लोग यहाँ आ पहुंचे। 'जाफराबाद कुरई', लिंडरपुर तथा रामौ–रूपपुर के स्वतंत्रता सेनानियों के एक

साथ मिल जाने से एक तो दल की संख्या काफी अधिक हो गई दूसरा सभी लोगों का मनोबल और अधिक ऊँचा हो गया था। जब यह दल 'जाफराबाद कुरई' से निकला तो स्वतंत्रता सेनानियों की संख्या बढ़कर कम सक कम 300–350 हो गयी थी। सेनानी ग्राम 'तंगरौला' से गुजरते हुए, तेजी से नूरपुर की तरफ बढ़ने लगे। लगभग डेढ़ घंटा चलने के बाद नूरपुर कस्बे की सीमा आ गयी। उस समय नूरपुर में सरकारी डाक बँगला बनना शुरू ही हुआ था, उसकी दीवारों की चिनाई हो रही थी। हालांकि तब यह बस्ती से काफी बाहर था। वर्तमान में यह पी.डब्लू.डी. के डाक बँगले के नाम से जाना जाता है। यह उसी अमरोहा मार्ग पर बन रहा था, जिससे फीना की ओर से आने वाले सेनानी नूरपुर थाने जा रहे थे। सेनानियों को यह अंग्रेजी प्रतीक लगा, इसलिए अनेक सेनानी निर्माणाधीन बँगले में घुस गये और जितना हो सका दीवारें गिरा दीं। आस–पास रखा सामान भी तोड़–फोड़ दिया गया।

III. पुलिस का सतर्क होना और नूरपुर की नाकाबंदी

पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि 11–12 अगस्त 1942 की रात में नूरपुर क्षेत्र के देशभक्त कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई थी। इसमें नूरपुर थाने पर भारतीय तिरंगा फहराने की योजना तथा इसके लिए बड़ी संख्या में नूरपुर चलने की बात कही गई थी। सरकार से छिपाने के लिए ग्राम फीना में यह बात ग्रामवासियों को 16 अगस्त को सुबह–सुबह ही बताई गई थी, परंतु अनेक गाँवों में यह योजना लोगों को पहले ही बता दी गई थी। 13–14 अगस्त तक घूम–फिर कर इस गोपनीय बात की थोड़ी–बहुत सूचना नूरपुर की पुलिस तक पहुँच गई। परन्तु पुलिस को सेनानियों की योजना का ठीक–ठीक पता नहीं लग पाया। उन्हें सिर्फ इतनी जानकारी ही हो पायी कि इस सप्ताह बड़ी संख्या में सेनानी नूरपुर में इकट्ठा होंगें। वह क्या करेंगे ? और कहाँ इकट्ठा होंगे इसकी कोई पुख्ता जानकारी पुलिस को नहीं मिल पायी। पुलिस ने संदेह की नजर से नूरपुर के स्वतन्त्रता सेनानी नन्हे सिंह को थाने बुलाकर पूछताछ की। परंतु नन्हे सिंह ने कोई बात उन्हें नहीं बताई। जल–भुन कर अंग्रेजी पुलिस ने उन्हें काफी यातनाएं दी।

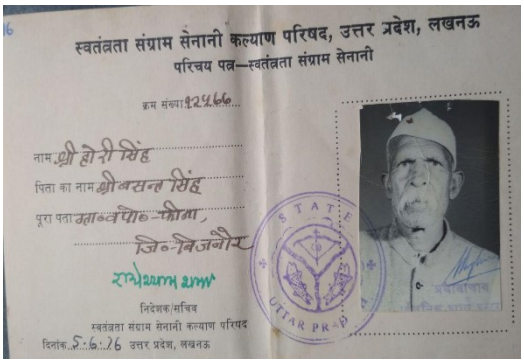

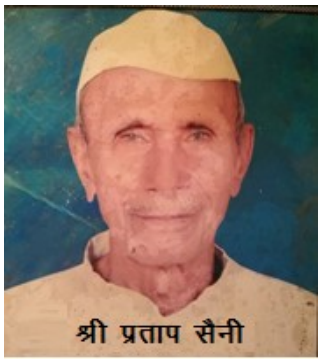

16 अगस्त 1942 को सुबह से ही लोग नूरपुर पहुँचना शुरू हो गए थे। तिरंगा फहराने का कार्यक्रम दोपहर 12.00 से 1.00 बजे के बीच रखा गया था, परन्तु सैकड़ो लोग इस समय से पहले ही पहुँच गए थे। उनमें से अधिकांश लोग नूरपुर के बाजार या सड़कों पर इधर–उधर टहल रहे थे। अनेक लोगों की पहले से ही इच्छा थी, कि जब नूरपुर जा ही रहे हैं तो बाजार भी घूम लिया जाए, और जरूरत का छोटा–मोटा सामान भी खरीद लिया जाए। इनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो अपने स्तर से पुलिस का सामना नहीं करना चाहते थे और उचित नेतृत्व के अभाव में यहाँ–वहाँ घूमकर समय काट रहे थे। सौ–पचास लोग सीधे नूरपुर थाने पहुँच गये थे और उसके आस–पास मँडरा रहे थे। 15 अगस्त को पुलिस को गहरा आभास हो गया था कि लोग आज–कल में थाने का घेराव करेंगे क्योंकि नूरपुर में थाना ही सरकार का सबसे महत्वपूर्ण कार्यालय है। इसलिए पुलिस ने नूरपुर आने वाले सभी रास्तों पर बैरिकेटिंग कर नाकाबंदी शुरू कर दी। थाने में पुलिस की संख्या सीमित थी, जिसके द्वारा किसी विशाल जनसमूह को नियंत्रित करना संभव न था, यह बात सोचकर पुलिस ने नूरपुर के स्थानीय लोगों को यह कहा, कि आस–पास के गाँवों के लोग नूरपुर को लूटने आ सकते हैं। इसलिए कल यानि 16 अगस्त को अपनी रक्षा के लिए आप सभी नूरपुरवासी, पुलिस का सहयोग करें, और लाठी–डंडा तथा सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए हथियारों के साथ आएं। पुलिस ने अंग्रेजों का साथ देने वाले लोगों तथा जमींदारों को भी शस्त्रों सहित बुलवा लिया। जो लोग सहायता के लिए थाने पहुँचे उनमें से कुछ को पुलिस ने थाने पर तथा कुछ को नूरपुर आने वाली सड़कों पर की गई की बैरिकेटिंग/नाकेबंदी पर सिपाहियों के साथ भेज दिया। इस प्रकार हर नाकेबंदी पर थोड़े सिपाही तथा अंग्रेजों के सहयोगी, कुछ स्थानीय लोग खड़े हो गये थे।

IV. फीना के सेनानियों का नूरपुर पहुँचना और पुलिस द्वारा लाठीचार्ज

पुलिस को आशंका थी कि फीना से की तरफ से काफी लोग आ सकते हैं, क्योंकि फीना में पुराने कांग्रेसी काफी संख्या में थे तथा वे सक्रिय भी रहते थे। इसलिए इधर से आने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को नूरपुर के

बाहर ही रोकने के लिए पुलिस ने स्थानीय लोगों एवं अपने समर्थक जमींदारों के गुर्गों की सहायता से बिजनौर–चाँदपुर तिराहा पर मजबूत नाकेबंदी कर ली थी। जैसे ही फीना की तरफ से आने वाले लोगों ने पुलिस की बैरिकेटिंग को दूर से देखा तो उनकी आशंका सही सिद्ध हुई। सत्याग्रहियों के दल को देखकर पुलिस ने उन्हें संकेत देने के लिए लाठियों को ऊपर उठा दिया, जिसका मतलब यह था कि जो भी बैरिकेटिंग को पार करेगा, उस पर लाठीचार्ज किया जाएगा। ऐसे क्षण नेतृत्वकर्ताओं के लिए निर्णायत्मक तथा कठिन परीक्षा के समान होते हैं। ऐसे मौकों पर यदि साहस तथा प्राणोत्सर्ग की भावना से पेश न आया जाए तो कुछ ही क्षणों में आन्दोलनकारी तितर–बितर हो जाते हैं तथा भारी भीड़ भी देखते ही देखते गायब हो जाती हैं। इन परिस्थितियों को भाँपकर क्षेत्रपाल सिंह, चंद्रपाल सिंह (निवासी झुझैला) प्रताप सैनी, डॉ. भारत सिंह, बसंत सिंह उर्फ वालिन्टियर साहब, इंदर सिंह वत्स (निवासी रामौ–रूपपुर), नौबहार सिंह (निवासी जाफराबाद कुरई), घासीराम, रणधीर सिंह पोटिया, होरी सिंह, आदि लोग अपने दल के ठीक आगे आ गए। इनमें से कुछ लोग लाठी–डंडा चलाना तथा उसके वार से बचना भी जानते थे। परंतु क्षेत्रपाल सिंह, चंद्रपाल सिंह (निवासी झुझैला) तथा डॉ. भारत सिंह इनमें भी सबसे आगे थे। फीना के जयदेव सिंह, महाराज सिंह, सुखलाल सिंह सांगी, बलकरन सिंह 'कटीर', परवीन सिंह (निवासी मोहल्ला–भूत), रामपाल सिंह 'सब्दलपुरिया', दिलीप सिंह, दौलत सिंह, बक्शे, मुरारी एवं मियाँ जी (गिदड़यो में), भी मौजूद थे।

(7) इस शोधपत्र की नवीन खोज एवं निश्कर्ष

इस शोधपत्र की उपलब्धि–इस शोध के माध्यम से ग्राम फीना के प्रताप सैनी, सुखलाल सिंह सांगी, बलकरन सिंह 'कटीर', परवीन सिंह (निवासी मोहल्ला–भूत), रामपाल सिंह 'सब्दलपुरिया', बक्शे, मुरारी एवं मियाँ जी (गिदड़यो में), जैसे कई ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों के नाम उजागर हुए जो गुमनाम थे। गाँव के आम–जन को बड़ी संख्या में प्रेरित करने की घटना से स्थापित हुआ कि बसंत सिंह कदरू, रणधीर सिंह पौटिया, क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी, डॉ. भारत सिंह, होरी सिंह डुंड बहुत प्रभावशाली तथा उच्च कोटि के स्वतंत्रता सेनानी थे। नूरपुर थाने पर तिरंगा फहराने के लिए फीना से सैकड़ों लोग गए थे। फीना के सेनानियों ने रतनगढ़ के डाकघर में तोड़–फोड़ की थी। सेनानियो के लुप्तप्राय फोटो तथा दुर्लभ दस्तावेज संकलित किए गए। पुष्ट हुआ कि सेनानियों ने नूरपुर के सरकारी डाक बँगले में तोड़–फोड़ की थी तथा क्षेत्रपाल सिंह, महात्मा गाँधी का साथ देने के लिए पूना तक गए थे।
निष्कर्ष–इस शोध से पता लगता है कि दूरस्थ गाँव होने के बावजूद फीना में देश को आजाद कराने के लिए आंदोलन संबंधित गतिविधियाँ काफी पहले से तथा उच्च स्तर पर चल रही थीं। इस गाँव के निवासियों ने अंग्रेजों से बेखौफ होकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। आन्दोलनों की सफलता में बसंत सिंह कदरू, रणधीर सिंह पौटिया, क्षेत्रपाल सिंह दिसोन्दी, डॉ. भारत सिंह, होरी सिंह डुंड जैसे समर्पित तथा प्रेरक नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(8) लेखक परिचय

इं० हेमन्त कुमार ग्राम फीना, जनपद–बिजनौर, (उ.प्र.) के मूल निवासी हैं, और सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग उत्तर प्रदेश में सहायक अभियंता के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने के.एल.पी. रुड़की से सिविल इंजीनियरिंग में तीन वर्षीय उपाधि प्राप्त की है। कला वर्ग से स्नातक है। सामान्य विज्ञान, इतिहास, रिर्सच, स्वाध्याय तथा लेखन में आपकी बहुत रुचि है। आपके कई शोध–पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। डिज़ाइन की श्रेणी में आपको एक पेटेंट भी प्राप्त हो चुका है तथा भारत सरकार के यहाँ आपके आठ आविष्कार तथा दो डिज़ाइन पेटेंट के लिए आवेदित हैं। भवन निर्माण कला पर इं० हेमन्त कुमार की दो जनोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा एक और पर लेखन कार्य कर रहे हैं। आप आपने पैतृक गाँव फीना तथा जिले बिजनौर के इतिहास पर भी अलग–2 पुस्तक लिखने में प्रयत्नशील हैं, प्रस्तुत शोधपत्र उसी का अंश है। भवन तकनीक को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने में आप सक्रिय रहते हैं और हरियाली बढ़ाने के लिए 'पेड़ जियाओ, लघु अभियान' भी संचालित करते हैं।